



सोशल मीडिया विकास या विनाश- (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)

KM NEHA KHANTWAL

पीएचडी शोधार्थी

ग्लगोटिया यूनिवर्सिटी,

ग्रेटर नोएडा, उत्तरप्रदेश

डॉ गजेन्द्र प्रताप सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

ग्लगोटिया यूनिवर्सिटी,

ग्रेटर नोएडा, उत्तरप्रदेश

सारांश-

इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य सोशल मीडिया के सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं के बारे में जानकारी देने से है। इस आंशिक समीक्षा में सोशल मीडिया का महिलाओं और पुरुषों पर पड़ने वाले सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक प्रभावों पर महत्वपूर्ण प्रतिबिंब को बढ़ावा देने की उम्मीद करता है। इस पत्र का उद्देश्य विभिन्न शोध पत्रों का अध्ययन, पहचान और अन्वेषण करना है। यह समाज में महिला और पुरुषों के सोशल मीडिया के विकास और विनाश के प्रकृति को दर्शाता है। साथ ही यह दर्शाता है कि किस प्रकार लोग सोशल मीडिया के प्रयोगों के आदि होते जा रहे हैं। इस शोध में प्रश्नावली विधि द्वारा प्रश्न पूछे गए हैं जिसके बाद यह देखने को मिला है कि वह चाहे लोगों का सामाजिक जीवन हो या आर्थिक, सांस्कृतिक जीवन हो या शैक्षिक सभी पर सोशल मीडिया का प्रभाव नकारात्मक और सकारात्मक दोनों ही देखने को मिले हैं। महिला हो या पुरुष सोशल मीडिया के नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रभावों से अछूते नहीं हैं।

कूजी शब्द- सोशल मीडिया, विनाश, विकास, एडिक्शन

भूमिका-

21वीं सदी को “सोशल मीडिया का युग” नाम दे दिया जाए तो इसके परिपेक्ष्य में कुछ गलत नहीं होगा। सोशल मीडिया इस युग में जान-पहचान बढ़ाने और सूचनाओं का चुटकियों में आदान-प्रदान करने का सबसे सशक्त माध्यम है। इसकी ओर बढ़ती सभी आमजनों की रुचि को देखा जाए तो सोशल मीडिया रोटी, कपड़ा और मकान के बाद

चौथी सबसे बड़ी जरूरत बन चुकी है। खाना शरीर को ऊर्जा और शक्ति प्रदान करता है लेकिन आजकल खाने का स्थान सोशल मीडिया ने ले लिया है। यदि आम भाषा में इसे परिभाषित किया जाए तो कहा जाएगा कि ज्ञान, बुद्धि, रूचि और वार्तालाप का विकास करने का सबसे अच्छा, सस्ता और टिकाऊ माध्यम ही सोशल मीडिया है।

नई तकनीकों को अपनाना विकास की इस दौड़ में जीतने के लिए उतना ही जरूरी है जितना हमारे शरीर के लिए श्वास लेना लेकिन इस सारे कार्यों में अपने समाज में चले आ रहे पारंपरिक चलन को हम इस प्रकार नजरअंदाज नहीं कर सकते हैं। एक दौर वह भी था जब खाने से पहले उस ईश्वर को धन्यवाद दिया जाता था जिनकी कृपा से हम उस भोजन को अपने परिवार के साथ खा रहे हैं और यह प्रार्थना की जाती थी कि हमें बहुत ज्यादा लालच नहीं है लेकिन कभी भूखे पेट हमें ना सोना पड़े इतना मजबूत बना देना लेकिन धीरे-धीरे मनुष्य परिवर्तन की ऐसी लिफ्ट में सवार हो गया कि ऊपर वाली मंजिलों को चढ़ना तो याद रहा लेकिन नीचे की मंजिलों को छोड़ता चला गया। अब भोजन करने से पहले भगवान को याद करने की परंपरा “ओल्ड फैशन” हो चुकी है बाजारीकरण और भौतिकवाद के युग में स्नैपचैट, व्हाट्सप्प और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया साइट पर खाने की स्टोरी लगाई जाती है ताकि लोगों को पता चल सके कि आप कब क्या करने में व्यस्त हैं और साथ ही साथ जीवन में लाइक, कमेंट और व्यूज की इतनी जरूरत है जितनी कि हमें जीने की भी नहीं है। हर व्यक्ति अपने निजी और सामाजिक पलों को अपने कैमरे में कैद करके रखना चाहता है लेकिन जिस प्रकार सोशल मीडिया का क्रेज बढ़ा है उस हिसाब से तो हम पूरी तरह से सोशल मीडिया के गुलाम नजर आते हैं कि सोशल मीडिया बादशाह की तरह हुकुमत चलाता है और हम अलादीन के चिराग में से निकले वह जिन्न हैं जिसमें अपने सोचने-विचारने की शक्ति नहीं है और हम कठपुतली की तरह इसके इशारों पर नाचते ही रहते हैं।

समाज में नैतिक मूल्यों को घटते हुए देखकर कभी-कभी वह पुराना समय याद आता है जब परिवार संयुक्त और रिश्ते मजबूत हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे मनुष्य डिजिटल और पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में आता जा रहा है वैसे-वैसे अपनी संस्कृति और नैतिक मूल्यों को भूलता नजर आ रहा है। इसी क्रम में जब भी मैं वृद्ध बूढ़े-बुजुर्गों को देखती हूँ तो उनकी आशा भरी निगाहें इस बात का जवाब मांगती हैं कि क्या डिजिटल होने का मतलब यह है कि अपने बूढ़े माता-पिता का अपमान किया जाए उन्हें समाज में धूतकारा जाए या इस बात के लिए प्रेरित करती है कि जिन माता-पिता ने पूरा जीवन अपने बच्चों के जीवन को संवारने में लगा दिया उनको बुढ़ापे में समाज का हिस्सा ही ना समझा जाए।

पहले के दौर में जब हमारे पास साधनों का अभाव था तो किस भी सूचना को पहुँचाने में कई महीनों का समय लगता था लेकिन टेक्नोलॉजी आने के बाद से हम चुटकियों में किसी भी व्यक्ति के पास अपनी सूचनाओं का आदान-प्रदान कर सकते हैं। घर बैठे किसी भी जगह को लाइव देख सकते हैं। ऐसा जरूर है कि सोशल मीडिया ने हमारे जीवन को निरश बना दिया है लेकिन इसको यदि हम सकारात्मक ढंग से एक टेक्नोलॉजी के रूप में इस्तेमाल करें तो हमारे लिए यह आज के युग का रामबाण है जिसके बाद काम और जीवन दोनों ही बड़े आसान हो गए हैं।

इस परिवर्तन का असर सिर्फ युवाओं पर ही देखने को नहीं मिला है बल्कि बच्चे से लेकर बुजुर्गों तक पर सोशल मीडिया ने अपनी छाप छोड़ी है। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि सोशल मीडिया के सिर्फ नकारात्मक प्रभाव ही समाज में देखने को मिले हैं सकारात्मक पहलुओं ने भी समाज की तस्वीर को उल्ट कर रख दिया है। किसी भी मुसीबत में फँसने पर तुरंत अपनों को सूचित कर पाना, किसी भी विषय में जानकारी को कहीं भी कभी भी

हासिल कर पाना, अपने टैलेंट को दिखाने का सही प्लेटफॉर्म पाना जैसी कई चीजों को इस सोशल मीडिया से ही बढ़ावा मिला है। तकनीकों को खराब कहना तो सही नहीं है लेकिन इसके इस्तेमाल के तरीकों को सही करना ही इसका सही माइने में उपयोग करना है।

कई शोधकर्ताओं ने अपने शोधपत्रों में सोशल मीडिया को सकारात्मकता की नींव को मजबूत करने की बात कही है वहीं कई शोधकर्ताओं ने सोशल मीडिया को सामाजीकरण की नींव को डगमगाने का मुख्य कारण कहा है।

शोध का उद्देश्य-

- 1- सोशल मीडिया के इस्तेमाल का लोगों के जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।
- 2- महिला और पुरुषों में सोशल मीडिया के एडिक्शन का आंकलन करना।

शोध की उपकल्पना-

- 1- सोशल मीडिया लोगों के जीवन को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ही तरह से प्रभावित करता है।
- 2- महिला हो या पुरुष दोनों को ही सोशल मीडिया का एडिक्ट कहा जा सकता है।

शोध प्रविधि-

- 1- निर्देशन प्रविधि- इस प्रविधि में सोशल मीडिया से संबंधित जानकारी प्राप्त करने हेतु ऑनलाइन 62 लोगों को चयन किया गया था।
- 2- प्रश्नावली प्रविधि- डाटा संकलन के लिए प्रश्नावली प्रविधि का प्रयोग किया गया।
- 3- अवलोकन प्रविधि- इस प्रविधि में टी-टेस्ट प्रविधि का प्रयोग किया गया।

शोध सीमा-

प्रस्तुत शोध में ऑनलाइन लोगों का चयन करके उनके मतों का समावेश किया गया है।

उत्तरदाताओं से प्राप्त उत्तरों का विश्लेषण

ग्राफ संख्या 1-

मैं सोशल मीडिया पर जाने के लिए उत्सुक रहता/रहती हूँ।
62 responses

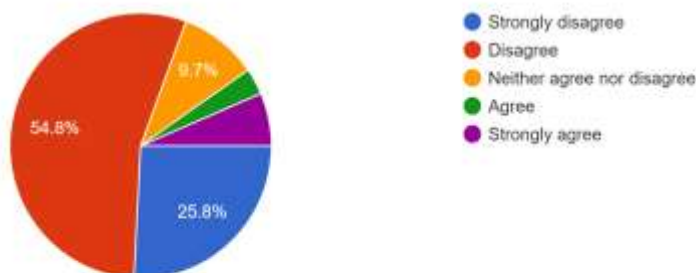


उपरोक्त ग्राफ से प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि 10 से 40 वर्ष के आयु सीमा के लोगों में 51.6 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया पर जाने के लिए हर वक्त उत्सुक रहते हैं जबकि 24.2 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिन्हें सोशल मीडिया पर जाने या ना जाने का कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता है। इसके अलावा 14.5 प्रतिशत लोग इस बात से असहमत हैं कि उन्हें सोशल मीडिया पर जाने की कोई उत्सुकता नहीं रहती है। अतः ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 51.6 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया पर जाने के लिए उत्सुक रहते हैं।

ग्राफ संख्या 2-

यहाँ तक की मेरा परिवार मुझसे नाराज है मैं फिर भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं छोड़ सकता/सकती।

62 responses

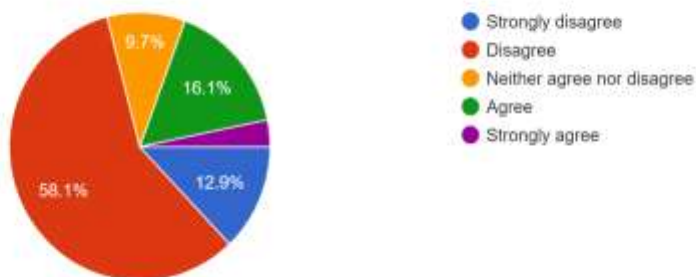


उपरोक्त ग्राफ से प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात हुआ है कि 54.8 प्रतिशत लोगों का मानना यह है कि यदि उनके परिवार के सदस्य उनके सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने से नाराज है तो वह उसका इस्तेमाल नहीं करते हैं। जबकि इसी श्रृंखला में 25.8 प्रतिशत लोगों का यह मानना है कि वह इस बात से पूरी तरह असहमत हैं कि वह परिवार के नाराज होने पर सोशल मीडिया के इस्तेमाल को छोड़ सकते हैं। जबकि 9.7 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया के इस्तेमाल करने पर परिवार के नाराज होने के कारण सोशल मीडिया छोड़ने के फैसले पर ना ही सहमत है और ना ही असहमत। अतः ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 54.8 प्रतिशत लोग सोशल मीडिया को परिवार से ज्यादा महत्व नहीं देते हैं।

ग्राफ संख्या 3-

मैं बुरा महसूस करता/करती हूँ जब मैं सोशल मीडिया इस्तेमाल नहीं करता/ करती।

62 responses

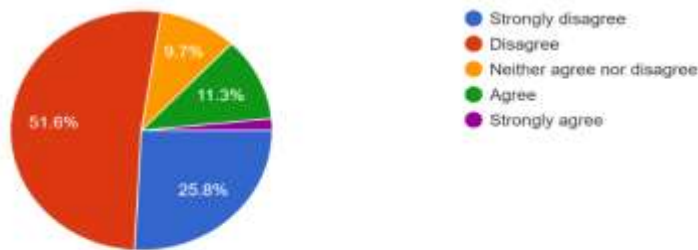


उपरोक्त ग्राफ से प्राप्त आँकड़ों से यह ज्ञात होता है कि 58.1 प्रतिशत लोग इस बात से पूरी तरह से असहमत हैं कि वह सोशल मीडिया के इस्तेमाल नहीं करने पर बुरा महसूस करते हैं। वहीं, 16.1 प्रतिशत लोग इस बात से पूरी तरह से सहमत हैं कि जब वह सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं करते हैं तब वह बुरा महसूस करते हैं। जबकि 9.7 प्रतिशत लोग इस बात से ना सहमत और ना ही असहमत हैं। अतः ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 58.1 प्रतिशत लोगों का यह मानना है कि वह सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं करने पर बुरा महसूस नहीं करते हैं।

ग्राफ संख्या 4-

मुझे सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते वक़्त भूख-प्यास का भी एहसास नहीं होता।

62 responses

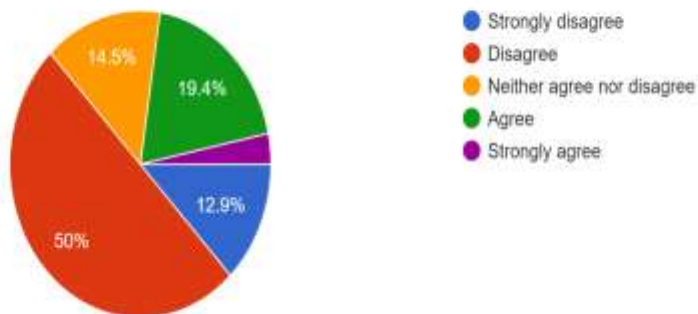


उपरोक्त ग्राफ से प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि 51.6 प्रतिशत लोग इस बात से असहमत हैं कि जब वह सोशल मीडिया इस्तेमाल करते हैं तो उन्हें भूख-प्यास का एहसास नहीं होता है। जबकि 25.8 प्रतिशत लोग इस बात से अत्यधिक असहमत हैं। वहीं, 11.3 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत हैं। अतः ग्राफ से स्पष्ट है कि 51.6 प्रतिशत लोगों को लगता है कि ऐसा बिल्कुल नहीं है कि बिना सोशल मीडिया इस्तेमाल करे उन्हें भूख-प्यास का एहसास नहीं होता है।

ग्राफ संख्या 5-

सोशल मीडिया ने मेरे शिक्षा के स्तर को घटाया है।

62 responses

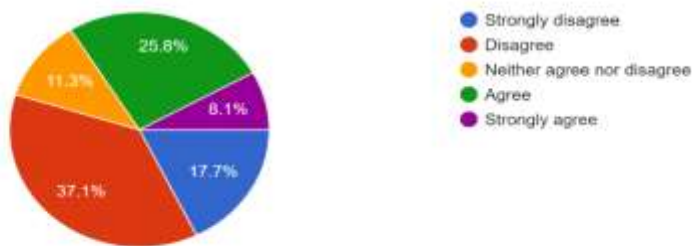


उपरोक्त ग्राफ से प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि 50 प्रतिशत लोग इस बात से असहमत हैं कि सोशल मीडिया ने उनके शिक्षा के स्तर को घटाया है। 19.4 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत हैं कि सोशल मीडिया ने उनकी शिक्षा के स्तर को घटाया है। इसी क्रम में 14.5 प्रतिशत लोग इस बात से ना ही सहमत हैं और ना ही असहमत। अतः ग्राफ से स्पष्ट है कि 50 प्रतिशत लोग इस बात से बिल्कुल असहमत हैं कि सोशल मीडिया ने उनके शिक्षा के स्तर को घटाया है।

ग्राफ संख्या 6-

सोशल मीडिया के इस्तेमाल से मेरे शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव पड़ा है।

62 responses

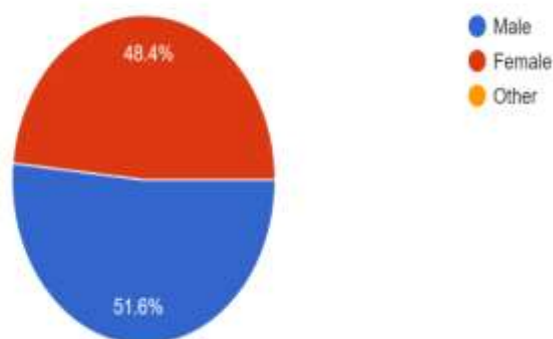


उपरोक्त ग्राफ से प्राप्त आँकड़ों से ज्ञात होता है कि 37.1 प्रतिशत लोगों का यह मानना है कि सोशल मीडिया के इस्तेमाल से उनके शारीरिक स्वास्थ्य पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ रहा है। जबकि 25.8 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत हैं कि सोशल मीडिया उनके शारीरिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। अतः ग्राफ से स्पष्ट होता है कि 37.1 प्रतिशत लोग इस बात से सहमत हैं कि सोशल मीडिया उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालता है।

ग्राफ संख्या 7-

sex

62 responses

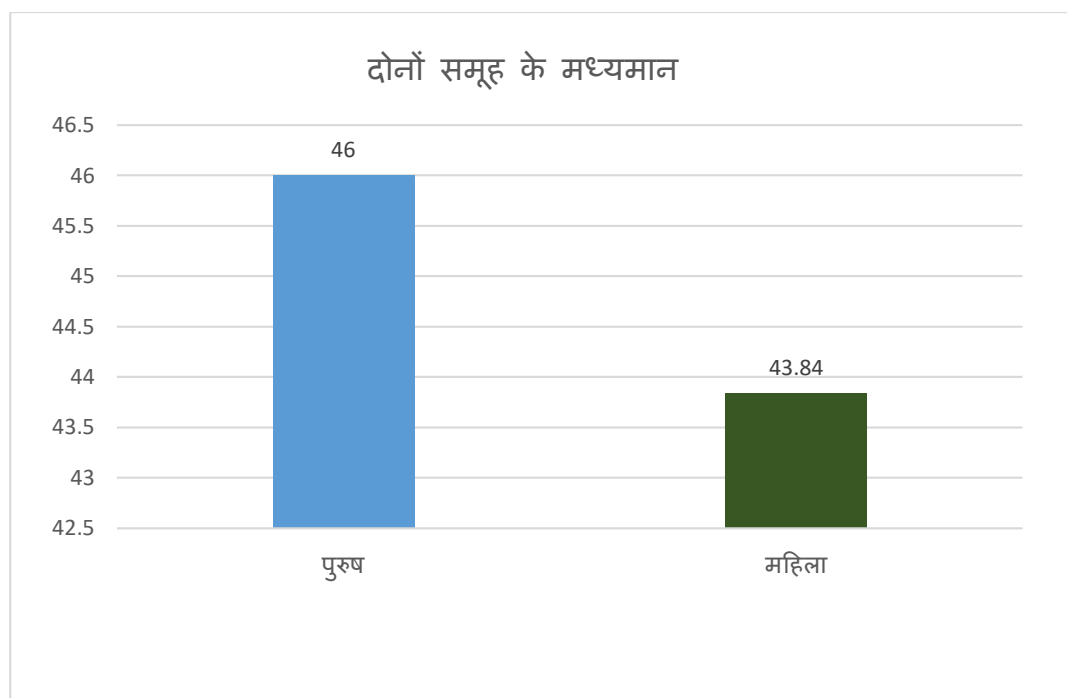


तालिका - 1 चरों से संबन्धित समूहों के मध्यमान, मानक विचलन तथा टी-मान।

चर	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी-मान	पी-मान
सोशल मीडिया एडिक्शन	पुरुष	31	46.00	9.05	0.824	0.413
	महिला	31	43.84	11.46		

उपरोक्त शोध से प्राप्त आँकड़ों में पुरुषों एवं महिलाओं के सोशल मीडिया एडिक्शन के आंकड़ों की तुलना करने पर पुरुष समूह में सोशल मीडिया एडिक्शन का मध्यमान 46.00 है और महिला समूह में 43.84 है। इससे पता चलता है कि पुरुषों में सोशल मीडिया एडिक्शन का स्तर महिलाओं से अधिक है। हालांकि, टी-मान 0.824 और पी-मान

0.413 ज्ञात हुआ जोकि किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः हम कह सकते हैं कि दोनों समूहों के सोशल मीडिया एडिक्शन में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। इसलिए हमारी शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।



निष्कर्ष-

सोशल मीडिया छात्रों के जीवन का सबसे अधिक प्रभाव डालते हैं। इस शोध से प्राप्त आँकड़ों में बच्चे और युवाओं के सोशल मीडिया के इस्तेमाल और उसमें देखी जाने वाली कई चीजों के विषय में सवाल किए गए थे जिसमें उनकी सोशल मीडिया को इस्तेमाल करने की उत्सुकता, सोशल मीडिया पर अपने जीवन के महत्वपूर्ण पलों को सांझा करना, इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ-साथ शारीरिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव, शिक्षा के घटते स्तर, परिवार और सोशल मीडिया में किसकी जरूरत ज्यादा जैसे विषयों पर सवाल किए गए थे जिसके बाद उत्तरदाताओं के उत्तरों से यही ज्ञात हुआ कि युवा वर्ग में लगभग 25.8 प्रतिशत युवा वर्ग हर वक्त ही इंटरनेट पर मौजूद रहता है। साथ ही 16.1 प्रतिशत युवा अपने सारे महत्वपूर्ण पलों को अपने ऑनलाइन दोस्तों के साथ सांझा करते हैं। साथ ही साथ बच्चे और युवाओं में से 25.8 प्रतिशत का यह मानना भी है कि सोशल मीडिया के अत्यधिक इस्तेमाल से शारीरिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर पड़ता है। इसके अलावा 19.4 प्रतिशत युवाओं का मानना है कि सोशल मीडिया ने उनके शिक्षा के स्तर को घटाया है। 11.3 प्रतिशत युवा जब सोशल मीडिया पर होते हैं तो उन्हें भूख-प्यास का एहसास नहीं होता है। 16.1 प्रतिशत युवा सोशल मीडिया के इस्तेमाल नहीं करने पर बुरा महसूस करते हैं। वहीं, 8 प्रतिशत युवा परिवार के नाराज होने पर भी सोशल मीडिया का इस्तेमाल नहीं छोड़ सकते हैं। बहरहाल, प्राप्त आँकड़ों से यही साबित होता है कि युवा पीढ़ी को सोशल मीडिया की नकारात्मकता का ज्ञान होते हुए भी कोई विशेष फर्क नहीं पड़ता।

वहीं, दूसरी ओर आयु वर्ग की बात करें तो वह चाहे 10 साल का बच्चा हो या फिर 30 साल का युवा सभी सोशल मीडिया के इस्तेमाल से बखूबी वाकिफ हैं। इसमें सबसे अधिक सोशल मीडिया इस्तेमाल करने वाला वर्ग है 23 से 31 वर्ष का युवा वर्ग जिनमें 12 प्रतिशत से 14 प्रतिशत तक के आँकड़ों का आंकलन किया गया है। इसके अलावा शहरों के बजाय ग्रामीण इलाके के युवा सोशल मीडिया को अत्यधिक मात्रा में इस्तेमाल करते हैं जिनका प्राप्त

अत्यधिक 17 प्रतिशत है। बात यदि सोशल मीडिया एडिक्शन की जाए तो पुरुष वर्ग में 46 प्रतिशत और महिलाओं में 43.84 प्रतिशत सोशल मीडिया का इस्तेमाल करते हैं जिसमें यह ज्ञात हुआ है कि सोशल मीडिया एडिक्शन का स्तर महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में अधिक है।

बच्चों और युवाओं पर सोशल मीडिया के सकारात्मक प्रभावों की बात की जाए तो यह शिक्षा, मनोरंजन के साथ-साथ देश-दुनिया के लोगों के साथ जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम है। वहीं, सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को देखे तो सोशल मीडिया ने समाज में अश्लीलता, अपराध, धोखाधड़ी को बढ़ावा दिया है। उसमें महिला वर्ग हो या पुरुष वर्ग सभी सोशल मीडिया के इस्तेमाल से अछूते नहीं हैं।

अंततः यही कहा जा सकता है कि समाज में तरक्की के रास्ते सोशल मीडिया ने खोले हैं यह इसका सकारात्मक पहलू है लेकिन यदि युवाओं के विकास से विनाश तक के सफर की बात की जाए तो सोशल मीडिया युवा पीढ़ी के लिए विनाशकारी ही साबित होता नजर आ रहा है। जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार सोशल मीडिया भी इन्हीं पहलुओं के बीच विद्यमान है यदि इसका सही तरीके से इस्तेमाल किया जाए तो विकास है और ना किया जाए तो विनाश।

संदर्भ सूची

- 1- TOJET: The Turkish Online Journal of Educational Technology – January 2018, volume 17 issue 1
- 2- Cengiz Şahin Faculty of Education, Ahi Evran University, Kirsehir, Turkey
- 3- Sonia David SOCIAL MEDIA ADDICTION AMONG INDIAN YOUNG ADULTS DURING COVID-19 - KIIT Journal of Management - Vol. 17(I), June-2021
- 4- डॉ. राजीव चौधरी जीवन शैली और जीवन शैली संबंधी आयामों के बीच परस्पर सहसंबंध Vol.11, Nov 2019
- 5- <https://www.drishtias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/are-social-media-platforms-the-arbiters-of-truth>
- 6- <https://www.researchgate.net/publication/276926972> A Research Paper on Social media An Innovative Educational Tool
- 7- <https://slejournal.springeropen.com/articles/10.1186/s40561-020-00118-7>
- 8- <https://link.springer.com/article/10.1007/s10796-017-9810-y>
- 9- <https://www.sjsu.edu/writingcenter/docs/handouts/Social%20Media%20in%20Research.pdf>
- 10- <https://www.researchgate.net/publication/273770861> The Impact of Social Media on the Academic Development of School Students
- 11- [Childhood and Growing Up in Hindi.pdf](#)
- 12- [160-184Parikalpana-Vol.17I.pdf](#)
- 13- [ResearchPaper-SSRC.pdf](#)
- 14- [paper.pdf](#)
- 15- [EJ1165731.pdf](#)